आत्मनिर्भर भारत की शक्तिपूर्ण कहानी एवं स्वावलंबी भारत का दृष्टिकोण

1. **ऋषिकेश यादव**
   मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग, चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर,
2. **रोबिन कुमार**
   मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या,
3. **उमेश कुमार**
   मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ

Received: Nov, 2023; Accepted: Nov, 2023; Published: Jan, 2024

परिचय

आत्मनिर्भर भारत मे आत्मनिर्भरता की आवाज, भारत के लिए महत्वपूर्ण नीतिक्रम बन गई है। "आत्मनिर्भर" शब्द में एक स्वावलंबी राष्ट्र की विचारधारा को समाहित किया गया है, जो केवल आर्थिक दृढ़ता मात्र नहीं है, बल्कि तकनीकी दृढ़ता भी है। विश्वजयी उत्पादन, नवाचार और प्रतिरोधक्षमता को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण से, आत्मनिर्भर भारत की शक्तिपूर्णीकरण की धाराएँ महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त की है।

e-ISSN No. 2583-0937

आत्मनिर्भर भारत के स्तंभ

आर्थिक स्वावलंबन: आर्थिक स्वावलंबन आत्मनिर्भर भारत का मूलभूत स्तंभ है। इसका मतलब है आयात पर निर्भरता को कम करना और विनिर्माण, कृषि और सेवा क्षेत्रों में घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना। "मेक इन इंडिया" और "वोकल फॉर लोकल" जैसी नीतियाँ घरेलू विनिर्माण और उपभोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाई गई है, जिससे राष्ट्र की आर्थिक स्वतंत्रता मज़बूत हो सके।

प्रौद्योगिकी उन्नति: आत्मनिर्भर भारत की शक्तिपूर्णीकरण में उन्नत प्रौद्योगिकियों का उपयोग अद्यतन और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। "डिजिटल इंडिया" और "स्टार्टअप इंडिया" जैसी पहलों ने प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तकनीकी उन्नतियों की राह खोली है, जो भारत की क्षमताओं को वैश्विक मंच पर मज़बूत करती है।

बुनियादी ढांचा विकास: आत्मनिर्भरता का एक और महत्वपूर्ण स्तंभ है। परिवहन नेटवर्क, ऊर्जा ग्रिड, और डिजिटल कनेक्टिविटी समेत मज़बूत बुनियादी ढांचा, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने, निवेश आकर्षित करने, और व्यवसायों के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाने के लिए आवश्यक है।

कौशल विकास और शिक्षा: आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए, एक शिक्षित और कौशलयुक्त श्रमिक अत्यधिक महत्वपूर्ण है। "स्किल इंडिया" जैसे योजनाएँ प्रशिक्षण और उपक्षिपदन के अवसर प्रदान करके, उद्योग की आवश्यकताओं और श्रमशक्ति की क्षमताओं के बीच की जाने वाली खाई को पूरी करने का उद्देश्य रखती है।

कृषि परिवर्तन: कृषि क्षेत्र आत्मनिर्भर भारत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। "पीएम-किसान" और "ई-नैम" जैसी योजनाएँ किसानों की आय को बढ़ावा देने, उन्हें आधुनिक तकनीकों की पहुँच प्रदान करने, और बेहतर बाजार संलग्नता की सुविधा प्रदान करने पर केंद्रित होती हैं।

आत्मनिर्भरता किन क्षेत्रों में और कैसी होनी चाहिए, इसका दृष्टांत भारत ने पेश किया

आत्मनिर्भरता भारत के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण दिशा है और यह उसकी सरकारी नीतियों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका मतलब है कि भारत को अपनी जरूरतों के लिए आत्मनिर्भर बनना होगा, खासकर वो क्षेत्र जिनमें हम विशेषज्ञता और स्वावलंबी बन सकते हैं। प्राथमिक रूप से, भारत को विनिर्माण क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता है। यह मानव संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार करके देश के उत्पादन को बढ़ावा देने का दौर शुरू कर सकता है। इसके लिए "मेक इन इंडिया" और "वोकल फॉर लोकल" जैसे योजनाओं का प्रमोशन किया जा रहा है, जो देश में उत्पादन और उपभोक्ता को बढ़ावा देने के लिए हैं। तकनीकी प्रगति में आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए तकनीकों का उपयोग करना होगा। "डिजिटल इंडिया" और "स्टार्टअप इंडिया" जैसे प्रमुख पहलों ने भारत के तकनीकी क्षेत्र में नवाचार की स्थापना की है, जिससे आत्मनिर्भरता के संदर्भ में सुधार हुआ है। कृषि क्षेत्र भी आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है। "पीएम-किसान" और "ई-नैम" जैसी योजनाएं किसानों के आय को बढ़ाने, उन्हें आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने का मौका देने, और बेहतर बाजार कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए हैं। इस प्रकार, भारत अपने विकास के लिए आत्मनिर्भरता की दिशा में कई क्षेत्रों में प्रयासरत हो रहा है, जिनमें विनिर्माण, तकनीकी प्रगति, और कृषि शामिल हैं, और इन क्षेत्रों में स्वावलंबी होने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है।

आत्मनिर्भरता का तात्पर्य व्यापार और रोजगार नहीं, स्वाभिमान और आत्मरक्षा है

आत्मनिर्भरता शब्द का तात्पर्य व्यापार और रोजगार से अधिक है, यह एक देश की सामाजिक और आर्थिक स्थिति कि स्थिरता और स्वाभिमान के साथ को दर्शाता है। यह एक सामाजिक आंदोलन का हिस्सा है जो एक देश के नागरिकों के मन में स्वाभिमान और आत्मरक्षा की भावना को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है। आत्मनिर्भरता का मतलब है कि एक देश को अपनी आवश्यकताओं को स्वयं पूरा करने की क्षमता होनी चाहिए, बिना बाह्य सहायता के। यह विश्वास को दर्शाता है कि देश अपने स्वाधीनता और स्वावलंबन के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। आत्मनिर्भरता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा यह भी है कि यह देश के नागरिकों के मन में आत्मसमर्पण की भावना पैदा करता है। यह स्वाभिमान की भावना देता है इसलिए, आत्मनिर्भरता का मतलब है कि एक देश को अपने स्वाभिमान और सुरक्षा की भावना के साथ अपनी समृद्धि की दिशा में प्रगति करने के लिए सशक्त होना चाहिए, और यह एक विशेष धारा के व्यवसाय या उद्योग से सीमित नहीं होता है, बल्कि समृद्धि, समाजिक समावेशन, और सांत्वना के साथ होता है।

भारत सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में दुनिया की बड़ी ताकत बनकर उभरा

भारत सॉफ़्टवेयर टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में दुनिया की बड़ी ताकत बनकर उभरा है। इस क्षेत्र में भारत ने विशेषत: गैरकानूनी तरीके से किए गए सॉफ़्टवेयर के बदलावों के साथ-साथ ग्लोबल मानकों का पालन किया है। यह सफलता भारत कि योजनाओं,

e-ISSN No. 2583-0937

विज्ञान और प्रौद्योगिकी कि क्षमता में निवेश, और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प का परिणाम है। बीते कुछ दशकों में, भारत ने सॉफ़्टवेयर विकास में अपनी प्राधिकृत बनाई है और अब यह एक महत्वपूर्ण वैश्विक खिलाड़ी है। भारतीय सॉफ़्टवेयर उद्योग की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह विविधता में विशेषज्ञता को प्रशंसा देता है। यह दुनिया भर से प्रतिष्ठित कंपनियों के लिए अपने सॉफ़्टवेयर और तकनीकी समाधान प्रदान करता है, जैसे कि वित्त, स्वास्थ्य, और विपणन। इसके अलावा, भारतीय सॉफ़्टवेयर उद्योग ने स्वयं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एक महत्वपूर्ण विकेन्द्रित बनाया है। यह उन्नत तकनीकी और अनुसंधान में निवेश करता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक मान्यता प्राप्त करता है। इसने डिजिटल युग में भारत की पहचान को बढ़ावा दिया है और विश्व स्तर पर उच्च गुणवत्ता के सॉफ़्टवेयर और सेवाओं का निर्माण किया है। इससे न केवल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला है, बल्कि भारत ने अपनी सॉफ़्टवेयर टेक्नोलॉजी के माध्यम से विश्व में एक प्रमुख खिलाड़ी की भूमिका भी निभाई है। इस सफलता के पीछे अनेक कारण हैं, जैसे कि तकनीकी ज्ञान का बढ़ता उपयोग, बेहतरीन अधिनियमन, और विश्वास के साथ-साथ ही, भारतीय सॉफ़्टवेयर उद्योग ने अपनी वित्तीय उन्नति में भी सुधार किया है। यह क्षेत्र एक विविध और व्यापक सेवा संचालन को समर्थन देता है, जिससे विश्व भर में उद्योगों को अपने सॉफ़्टवेयर और तकनीकी समाधान प्रदान करने की क्षमता मिलती है। इसका नतीजा यह है कि भारत सॉफ़्टवेयर उद्योग ने एक बड़ा और महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है, जिससे यह एक अद्वितीय तरीके से विश्व स्तर पर अपने नाम को प्रमोट करता है। इस सफलता के साथ, भारत सॉफ़्टवेयर उद्योग ने अपनी विकास और सुधार की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जो आगे बढ़कर भारत को औद्योगिक युग की ओर प्रगति करने में मदद करेंगे।

भविष्य की संभावनाएँ

वैश्विक नेतृत्व आत्मनिर्भर भारत को प्रौद्योगिकी, नवाचार, और सतत विकास के क्षेत्र में स्थान प्राप्त कर सकता है, जो कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार और कूटनीति पर प्रभाव डालेगा। अनुसंधान, नवाचार और बौद्धिक संपत्ति पर जारी दिलचस्पी को बरकरार रखने की आवश्यकता है, जो आर्थिक विकास और स्वावलंबन को बढ़ावा देने की दिशा में है। हरित प्रौद्योगिकियों का विकास और उपयोग करने से हम पर्यावरणिक चुनौतियों का समाधान ही नहीं कर सकते हैं, बल्कि ऊर्जा सुरक्षा और संसाधन कुशलता को भी बढ़ावा दे सकते हैं। कौशल विकास योजनाएँ आगे बढ़कर सुनिश्चित करने के लिए जारी रखनी चाहिए जिससे कि एक संयोजनशील और अनुकूलनशील श्रमिक जो भारत की आर्थिक वृद्धि में योगदान कर सके।

e-ISSN No. 2583-0937